अप्रैल : 2021 वर्ष : 4 अंक : 7

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, अप्रैल 2021 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

न्युजलेटर के इस अंक में संस्थान की मार्च 2021 महीने की अनुसंधान एवं अन्य कार्यकलापों का समावेश किया गया है जिसमें सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कार्यकलाप है - दिनांक 8 मार्च 2021 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का पालन। संस्थान की अन्य गतिविधियों में डंबूर जलाशय, त्रिपुरा में पिंजरों में कॉमन कार्प (साइप्रिनस कार्पियो) का प्रायोगिक पालन; पश्चिम बंगाल में पूर्वी मिदनापुर के मोयना एक्वाकल्चर हब में मछलियों में एरोमोनास एसपीपी संक्रमण की जांच; गंगा नदी के विभिन्न हिस्सों में 4 रैंचिंग कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय मेजर कार्प और कैटफिश के अंगुलिकाओं को प्रवाहित करना आदि।

वर्ष 2020 के कोरोना महामारी की त्रासदी ने इस वर्ष भी दस्तक देना शुरू कर दिया है। फिर से वही लॉकडाउन, परिवहन सेवाओं का ठप्प होना, और अंततः कार्य में अनियमितता और बाधायें। पर हमें पहले की भांति स्वयं के मनोबल को बनाये रखना होगा जिससे इस हतासा भरी स्थिति का सामना कर सकें।

मैं समस्त पाठकों और संस्थान कर्मियों के लिये उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूं।

धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2021 का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के मुख्यालय में 8 मार्च 2021 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया । इस वर्ष के महिला दिवस का विषय "चुनौती को चुने" था और पूरे कार्यक्रम को विषय को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत भाकृअनुप गान से हुई। डॉ. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक और अध्यक्ष महिला कक्ष ने सम्मानित अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। इस अवसर पर तीन महिला उद्यमियों को मत्स्य क्षेत्र में उनके अनुकरणीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। नयीहाटी की भारतीय प्रमुख कार्प बीज उत्पादक, श्रीमती सुभा पाठक जिन्होंने अपने पति के स्वास्थ्य खराब होने पर अपने पति के व्यवसाय को अपनाया और उनके व्यवसाय में दृढ़ता से समर्थन करने के उद्देश्य से भारत के विभिन्न हिस्सों की यात्रा की, श्रीमती रुपा मेयुर और सुश्री होसेनरा खातून, सजावटी मछली के उत्पादक को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सम्मानित किया गया। डॉ. अपर्णा रॉय, वरिष्ठ बैज्ञानिक, और चेयरमैन महिला शिकायत प्रकोष्ठ ने "फिशरीज सेक्टर में महिलायें: ए जर्नी टूवार्ड्स 3 ई" पर एक प्रस्तुति दी। उन्होंने मछुआरों को सशक्त बनाने में केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की भूमिका को बताया किया। डॉ. कौशल्या नायक, व्याख्याता, डीएवी कॉलेज, ओडिशा ने अपने भाषण में बताया कि कैसे महिलाएँ पेशेवर और घरेलू दोनों क्षेत्रों में अपने जीवन को

संतुलित कर रही हैं। सुश्री शर्मिष्ठां दास, आईएएस, एमडी, बेनफिश ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। अपने भाषण में, उन्होंने कुछ प्रेरणादायक केस स्टडीज और ग्रामीण महिलाओं की सफलता की कहानियों को साझा किया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और प्रतिभागियों को उसी दिन सम्मानित किया गया। 12 महिला कर्मचारियों को उनके संस्थान में किये गये कार्यो के लिए प्रशंसा प्रमाण पत्र भी दिए गए। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने अपने संबोधन में महिला कर्मचारियों को याद दिलाया कि वे अपनी गतिविधियों के आधार पर आकाश को छू सकती हैं। उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में योगदान के लिए महिला वैज्ञानिकों और कर्मचारियों की भी सराहना की। कार्यक्रम में 30 मछुआरों, राज्य सरकार के दो अधिकारियों और स्टाफ सदस्यों के परिवार सहित लगभग 220 व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में ऑनलाइन मोड के माध्यम से संस्थान के केन्द्रों के कर्मचारी ने भी भाग लिया। सुश्री सुनीता प्रसाद,वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी और सदस्य सचिव, महिला सेल द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज में एक दिवसीय ऑन लाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

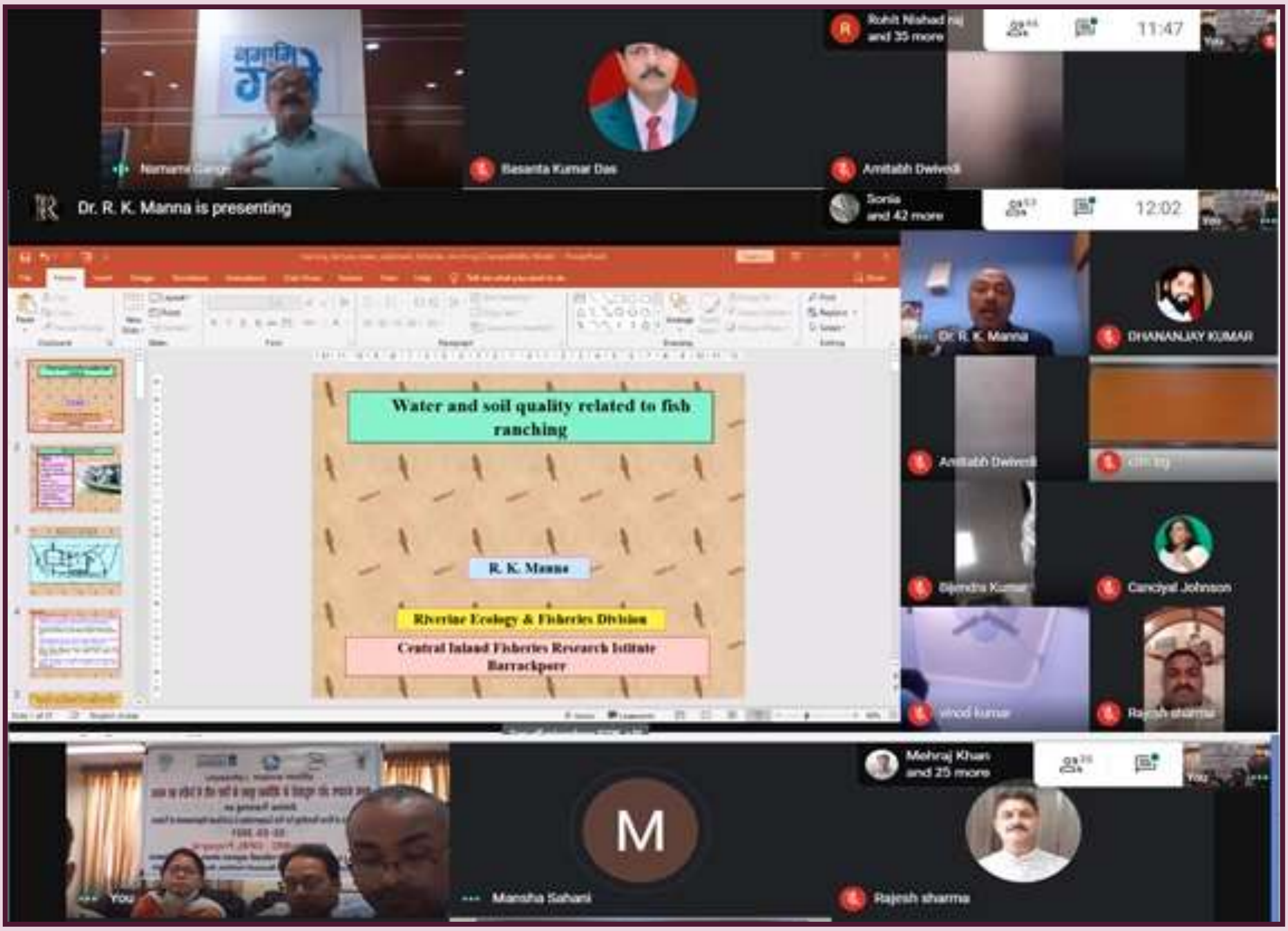

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज द्वारा ऑनलाइन मोड में दिनांक 02 मार्च, 2021 को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, "मछली पालन के लिए नदी संरक्षण और मछली पालन की आजीविका में सुधार" पर आयोजित किया गया जिसमें 50 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, गंगा विचार मंच और डब्ल्यूआईआई के प्रतिनिधि, मछुआरें, छात्र और हितधारक जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गंगा नदी से जुड़े हैं शामिल हुए। डा॰ डी॰एन॰झा, प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। संस्थान के निदेशक डॉ॰ बि.के. दास ने गंगा नदी में मछली छोड़ने के माध्यम से मछली विविधता संरक्षण में संस्थान की भूमिका का उल्लेख किया और संस्थान द्वारा हिलसा प्रजनन की दिशा में किए गए प्रयासों को बताया। डॉ॰ संदीप बेहरा, परामर्षक, राष्ट्रीय गंगा स्वच्छ मिषन (एनएमसीजी) ने जैव विविधता संरक्षण की दिशा में अपने कार्यों को बताया जिसमें डॉल्फिन आदि भी शामिल हैं। संस्थान द्वारा रैंचिंग कार्य और जल और मिट्टी की गुणवत्ता की भूमिका को संस्थान के वैज्ञानिक डॉ॰आर.के. मन्ना ने विस्तृत तरीके से समझाया। डॉ॰ अबसर आलम ने गंगा नदी के महत्व और मछली विविधता तथा डॉ॰ मोनिका गुप्ता ने मछली संरक्षण में मदद के साथ-साथ मछुआरों की आय में सुधार पर प्रकाष डाला। डॉ॰ वी॰ आर॰ ठाकुर, वैज्ञानिक, प्रयागराज केंद्र ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

ओडिशा के हीराकुंड जलाशय में पोषण सुरक्षा और उत्पादकता बढ़ाने के लिए कार्यशाला का आयोजन

संस्थान ने हीराकुंड जलाशय, ओडिशा में पोषण सुरक्षा और उत्पादकता बढ़ाने के लिए रणनीतिक योजना पर कार्यशाला का आयोजन किया। संस्थान ने एक गैर सरकारी संगठन (बानो चैरिटेबल ट्रस्ट)और राज्य मत्स्य विभाग, ओडिशा के सहयोग से दिनांक 1 मार्च 2021 को ओडिशा के संबलपुर में समुदाय में सुधार लाने के लिए 'हीराकुंड जलाशय में पोषण सुरक्षा और उत्पादकता बढ़ाने के लिए रणनीतिक योजना' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन स्थायी जलाशय प्रबंधन और मछुआरों को जागरूक और प्रेरित करने के लिए किया गया था। कार्यशाला में 6 विभिन्न प्राथमिक मछुआरों सहकारी समितियों के 120 मछुआरों ने भाग लिया। जिला मजिस्ट्रेट, श्री एस० सक्सेना, आईएएस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने हीराकुंड जलाशय की क्षमता का उल्लेख किया और यह भी सुनिश्चित किया कि स्थानीय प्राधिकरण हीराकुंड जलाशय के मछुआरों के समुदाय के विकास के लिए सभी प्रकार के सहयोग दे। संस्थान के निदेशक डॉ० बि. के.दास, वर्तमान उत्पादन और इसकी वास्तविक क्षमता के बीच अंतर को मिटाने के लिए और उत्पादन में एक रूपता लाने के लिए इस जलाशय की वैज्ञानिक तौर पर प्रबंधन योजना के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ० दास ने कहा कि संस्थान की प्रौद्योगिकियां जैसे पिंजरा और पेन मे उन्नत अंगुलिकाओं का संचयन की महत्वपूर्ण भूमिका होगी जिससे जलाशय के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। श्री बी० पी० द्विवेदी, उप निदेशक, मत्स्य विभाग, ओडिशा सरकार ने अपने संबोधन में हीराकुंड जलाशय में उत्पादन वृद्धि के लिए संस्थान के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्धता दिखाई। संस्थान के वैज्ञानिक श्री हिमांशु एस. स्वैन ने पिंजरे में मछली पालन के तकनीकी पहलूओं का उल्लेख किया और हीराकुंड जलाशय में स्थापित सिफरी जीआई आयताकार पिंजरों की सफलता पर प्रकाष डाला। डॉ ए० रशीद, अध्यक्ष, बानो ट्रस्ट ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में उल्लेख किया। चर्चा सत्र के दौरान, वैज्ञानिक और मछुआरों के बीच संवादात्मक बैठक में मछुआरों ने अपनी समस्याओं और अनुभवों को साझा किया। महामारी की स्थिति को देखते हुए भारत सरकार के कोविड-19 दिशानिर्देश का पूर्णतः ध्यान रखा गया। कार्यक्रम का समन्वय श्री सतीश कौशलेष, डॉ०पी० के० परिडा, श्री हिमांशु एस० स्वैन और मितेश एच० रामटेके की देखरेख में हुआ।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का 75 वां स्थापना दिवस

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 17 मार्च, 2021 को अपना 75वां स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्तुति गीत से की गई। इस समारोह के मुख्य अतिथि, रामकृष्ण आश्रम, सारगाछी के सचिव, स्वामी विश्वमायानंद जी थे। अन्य सम्मानित अतिथियों में भाकृअनुप-निमफेट के निदेशक, डॉ. बी. बी. शाक्यवार; विधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी. एस. महापात्र और भाकृअनुप-केन्द्रीय पटसन एवं सम्बद्ध रेशा संस्थान के निदेशक, डॉ गौरांगों कर प्रमुख थे। यह कार्यक्रम ऑनलाइन मोड में भी आयोजित किया गया था जिसके माध्यम से डा. जे. के. जेना, माननीय उप-महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, संस्थान कर्मी, संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र/स्टेशन और संस्थान के पूर्व निदेशकों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त संस्थान कर्मी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्य संस्थानों और विभिन्न बीलों (आर्द्रक्षेत्र) से जुड़े मछुआरा परिवारों ने भी भाग लिया । कार्यक्रम के आरंभ में संथान के निदेशक, डा. बि. के. दास ने स्वागत सम्बोधन के साथ किया।। उन्होंने सभी अतिथियों का स्वागत किया और पिछले 3 वर्षों में संस्थान की गतिविधियों व उपलब्धियों पर एक प्रस्तुति दी। इसके बाद गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित किया गया । स्थापना दिवस के मुख्य अतिथि, रामकृष्ण आश्रम, सारगाछी के सचिव, स्वामी विश्वमायानंद जी ने सभा को संबोधित किया और महामारी काल में संस्थान के कार्यों की सराहना की। उन्होंने संस्थान के पुरस्कृत कर्मियों और

स्थापना दिवस के दौरान लोकार्पित प्रकाशनों के लेखकों को बधाई दी। स्वामी विश्वमायानंद जी ने एकीकृत मत्स्य पालन प्रौद्योगिकी के महत्व पर भी जोर दिया और अधिक संभावनाओं के लिए सभी संस्थानों के बीच अधिक सहयोगात्मक कार्य हेतु प्रेरित किया।

उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी के भाषण का संदर्भ लेते हुए इस बात पर भी जोर दिया कि नवीन तकनीकों और आविष्कार को आम लोगों तक पहुंचना चाहिए। डा. बी. एस. महापात्र ने 75वें स्थापना दिवस के अवसर पर सिफ़री परिवार को बधाई दी और कहा कि यह बड़े गर्व की बात है कि संस्थान हमारे देश की स्वाधीनता वर्ष से ही राष्ट्र की सेवा कर रहा है। उन्होंने मात्स्यिकी क्षेत्र में संस्थान के कार्यों की सराहना की तथा कृषि गतिविधियों के साथ मत्स्य पालन विशेष रूप से पोषक तत्वों से भरपूर छोटी स्वदेशी मछलियों के एकीकृत पालन पर जोर दिया। डॉ. बी. बी. शाक्यवार ने संस्थान को राष्ट्र के लिए 74 गौरवशाली सेवा वर्ष पूरा करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कोविड काल में भी संस्थान की उत्कृष्ट उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि पेटेंट, प्रौद्योगिकियों, परियोजनाओं आदि के रूप में संस्थान में ख्याति दिलाने के लिए कर्मचारियों के प्रयास प्रशंसनीय हैं। उन्होंने प्रतिष्ठित नमामि गंगे परियोजना के तहत संस्थान द्वारा किए गए गंगा मत्स्य संरक्षण और संरक्षण गतिविधियों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा शुरू की गई अनुसंधान और विकास गतिविधियां प्रत्यक्ष तौर पर सामाजिक विकास में सहयोगी हैं । डॉ गौरांगों कर ने इस अवसर पर संस्थान के निदेशक को उत्कृष्ट नेतृत्व के लिए बधाई दी और अपनी शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कोविड काल के दौरान

संस्थान के विकास कार्यों की भी सराहना की। उन्होंने जल की घटती उपलब्धता जैसी गंभीर मुद्दों पर बात की और प्रति यूनिट जल उत्पादकता बढ़ाने और कृषि गतिविधियों के जल की कमी को पूरा करने पर जोर दिया। उन्होंने पर्यावरण ह्रास, जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर भी चर्चा की और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए जरूरत आधारित और मांग आधारित अनुसंधान परियोजनाओं पर जोर दिया । डा. जे. के. जेना, माननीय उप-महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने ऑनलाइन मोड द्वारा इस समारोह में भाग लिया। उन्होंने कोविड 19 महामारी काल में संस्थान के कार्यों की सराहना की और स्थापना दिवस के दौरान सम्मानित किए गए सभी विजेताओं को बधाई दी। एफएओ कंसल्टेंट और पूर्व सहायक महानिदेशक (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, डॉ वी वी सुगुणन ने भी संस्थान के कार्यों की सराहना की और संस्थान के विकसित प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला । संस्थान ने बिहार के आर्द्रझीलों में मात्स्यिकी विकास हेतु प्रकाशन, संस्थान के कॉफी टेबल बुक, ‘Common plankton of river Ganga’, ‘Strategic plan for inland open water fisheries development under PMMSY’, हिन्दी में पुस्तक, अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी संवर्धन एवं समाधान और हिन्दी फ़ोल्डर, जैसी कई प्रकाशनों का विमोचन किया। संस्थान के स्टाफ परिवार के मेधावी छात्रों को प्रशस्ति पत्र और नकद पुरस्कार दिए गए। वर्ष 2020-2021 के लिए सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, कुशल सहायक और रिसर्च स्कॉलर के लिए संस्थान पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन संस्थान की वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ अपर्णा रॉय ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संयुक्त निदेशक एवं कुलसचिव, श्री राजीव लाल ने दिया।

संस्थान में बाढ़कृत आर्द्रभूमि में मत्स्य संवर्धन पर ऑनलाइन प्रशिक्षण

संस्थान में दिनांक 09 मार्च 2021 को 'बाढ़कृत आर्द्रभूमि में मत्स्य संवर्धन' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। यह प्रशिक्षण भारत के बाढ़कृत मैदानों में मछली की पैदावार को बढ़ाने के लिए प्रबंधन रणनीति को बेहतर बनाने और सुधारने के लिए आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण के मुख्य विशय थे 1) बाढ़कृत मैदानों में मत्स्य पालन संवर्धन प्रोटोकॉल का पालन 2) बीज पालन तकनीक के लिए घेरे में पालन और 3) नर्सरी/घेरे में मछली बीज पालन पर प्रबंधन और प्रशिक्षण। इस कार्यक्रम में बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, असम और पश्चिम बंगाल सहित भारत के विभिन्न हिस्सों से 50 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक और प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक डॉ० बि० के० दास ने ग्रामीण समुदाय के लिए आजीविका सुधार और रोजगार सृजन के लिए अंतर्स्थलीय खुला जल मात्स्यिकी के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ० यू०के० सरकार, प्रशिक्षण के समन्वयक और प्रभागाध्यक्ष ने भारत के विभिन्न हिस्सों से आए प्रतिभागियों का स्वागत किया और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। डॉ० एम० ए० हसन, प्रभागाध्यक्ष ने आर्द्रभूमि में मैक्रोफाइट प्रबंधन और संचयन बढ़ाने पर चर्चा की। डॉ० ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी, प्रशिक्षण और विस्तार कक्ष ने आर्द्रभूमि में पालन आधारित मात्स्यिकी हेतु मत्स्य बीज पालन के महत्व पर प्रकाष डाला। डॉ० एच.एस. स्वैन, वैज्ञानिक ने आर्द्रभूमि में आधारित मात्स्यिकी हेतु नर्सरी तालाब में मत्स्य बीज प्रबंधन तकनीक का उल्लेख किया। डॉ० सुमन कुमारी, वैज्ञानिक ने आर्द्रभूमि में छोटी स्वदेशी मछलियों के महत्व और इसकी प्रबंधन रणनीति के बारे में विस्तार से बताया। डॉ० अपर्णा रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना की योजनाओं और मछुआरों के लिए इसके महत्व का उल्लेख किया। फीडबैक और संवादात्मक सत्र में आर्द्रभूमि मात्स्यिकी प्रबंधन संबंधी मुद्दों पर चर्चा की गई तथा निदान उपायों को बताया गया। प्रतिभागियों ने आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के प्रबंधन पर अपना अनुभव भी साझा किया। प्रशिक्षण का समन्वयन डॉ. सुमन कुमारी, डॉ. लियानथुमलुआ और डॉ. अपर्णा रॉय द्वारा किया गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज द्वारा गंगा नदी में 15000 भारतीय प्रमुख कार्प की अंगुलिमीनों की रैंचिंग

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने गंगा और यमुना नदी के संगम पर एक रैंचिंग-सह- जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया और भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी) के 15000 अंगुलिकाओं को गंगा नदी में छोड़ा गया। मछुआरों को गंगा नदी की मछलियों और मत्स्य पालन के बारे में जागरूक करने और मछली प्रजातियों की घटती संख्या को पुनस्थापित करने और संरक्षित करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत किया गया था। केंद्र के प्रभारी, डॉ॰ डी॰एन॰ झा ने रैंचिंग के महत्व को समझाया। उन्होंने मछुआरा समुदाय को प्रजनन काल के दौरान भारतीय प्रमुख कार्प के ब्रुड मछलियों को नहीं पकड़ने का सुझाव दिया और संस्थान द्वारा गंगा नदी की महत्वपूर्ण मछलियों के संरक्षण और पुनस्थापना के लिए किए गए कार्यों के बारे में भी बताया। डॉ॰ अबसर आलम, वैज्ञानिक ने गंगा नदी में मछलियों की पुनस्थापना, मत्स्य पालन में मछुआरों की भूमिका के बारे में जानकारी दी। श्रीमति अनामिका चौधरी, राज्य समन्वयक गंगा विचार मंच, एनएमसीजी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थी। उन्होंने उपस्थित दर्शकों को गंगा को स्वच्छ रखने के लाभ के बारे में बताया। उन्होंने गंगा नदी के लिए और मछुआरा समुदाय के लिए मछलियों के महत्व के बारे में भी बताया। इस कार्यक्रम में गंगा विचार मंच, गंगा प्रहरी, गंगा कार्य बल, डब्ल्यूआईआई, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश, आसपास के गांवों के मछुआरों, मछली व्यापारियों और गंगा के किनारे रहने वाले स्थानीय लोगों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में डॉ॰ वेंकटेश ठाकुर, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

माननीय केन्द्रीय मंत्री मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री श्री गिरिराज सिंह जी से मुलाकात

दिनांक 24 फरवरी को केन्द्रीय मंत्री मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री श्री गिरिराज सिंह जी के कोलकता आगमन पर संस्थान के निदेशक डा. बि. के. दास सह अन्य वैग्यानिक ने माननीय मंत्री जी से मुलाकत की। निदेशक महोदय ने मानीय मंत्री जी को संस्थान में चल हीं गतविधियों से अवगत करवाया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने संस्थान से प्रकाशित पुस्तको और वार्षिक प्रतिवेदन आदि को मंत्री जी को भेंट किया। माननीय मंत्री महोदय ने संस्थान की चल रही गतिविधियों पर अपनी प्रसन्नता जतायी।

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने एनईएच घटक के तहत असम की बीलों को अंगीकृत किया

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और डॉ. जे.के. जेना, उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली के सक्षम मार्गदर्शन के तहत, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने चार बील्समें मछली पालन संवर्धन कार्यक्रम किए हैं। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा संस्थान के एनईएच घटक के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. बी. के. भट्टाचार्य की अध्यक्षता में मत्स्य बीज भंडारण कार्यक्रम असम के अलग-अलग चार जिलों में किए गए। भारतीय प्रमुख कार्प , लबेयों बाटा और एल. गोनियस सहित कुल 160,000मछली की बड़ी अगुलिकाएं बोरोबाई बील (बोंगईगांव जिला), घोराजन बील (कामरूप ग्रामीण जिला), रूपाहील

(नागांव जिला) और असम के डंडुआ बेयल (मोरीगांव जिला) में 06-10 मार्च, 2021 तक प्रत्येक बील में 40,000 अन्गुलिकाएं छोड़ी गईं। बील में पूरक मछली बीज स्टॉकिंग के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रमुख, कार्यक्रम समन्वयक, के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित किए गए थे। कार्यक्रम भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, मत्स्य विभाग, असम और असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड, गुवाहाटी के सहयोग से आयोजित किए गए थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रोनोब दास, श्री एस. बोरहा, श्री ए.के. यादव, वैज्ञानिकों और वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, श्री अमूल्य काकाती संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के ने किया। इन कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य बील्स में मछली स्टॉक बढ़ाने के महत्व पर जागरूकता पैदा करना था और साथ ही मछली उत्पादन और आय में वृद्धि के माध्यम से उनकी आजीविका में सुधार करना था। संस्थान द्वारा किए गए मछली स्टॉक में वृद्धि से मौजूदा उत्पादन में 80 टन (चार बील में से प्रत्येक में 20 टन) का अतिरिक्त मछली उत्पादन होने की संभावना है। चार बील से कुल 2491 मत्स्य पालक परिवारों को पूरक स्टॉकिंग कार्यक्रमों के लाभों को प्राप्त करने की उम्मीद है। मछुआरो के साथ बातचीत के दौरान, डॉ. पी. दास ने स्टॉक एन्हांसमेंट कार्यक्रमों की पृष्ठभूमि और उद्देश्यों को समझाया। श्री सिमांकु बोरा ने बील मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं और इन मूल्यवान संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में बताया। श्री अनिल कुमार यादव ने बील के लिए विकसित CIFRI प्रौद्योगिकियों के आर्थिक लाभों पर चर्चा की और वैज्ञानिक प्रबंधन दिशानिर्देशों का पालन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। स्थानीय बील मछुआरो, मछली पकड़ने वाले समुदायों और संबंधित बीलों के समाजों / समितियों ने स्टॉक संवर्द्धन कार्यक्रमों के सफल कार्यान्वयन के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और मछली उत्पादन, आय और आजीविका में सुधार के लिए अपनी पहल के लिए संस्थान के निदेशक, के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ

अन्तर्स्थलीय जल में मछली रोग और स्वास्थ्य प्रबंधन पर क्षमता निर्माण' पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम

जलीय कृषि में मछलियों में रोग संक्रमण एक बड़ी समस्या है जिसके निदान और नियंत्रण संबंधी जानकारियां मछुआरों और मछली किसानों को ज्ञात नहीं है। मछली स्वास्थ्य में किसानों, छात्रों और उद्यमियों की क्षमता विकसित करने के लिए, संस्थान द्वारा 'अन्तर्स्थलीय जल में मछली रोग और स्वास्थ्य प्रबंधन' पर तीन दिन (4-6 मार्च, 2021) का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। परिषद द्वारा वित्त पोषित मछली स्वास्थ्य पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना के तहत यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ॰ बि, के. दास ने किया। उन्होंने पूरे भारत से शामिल हुए उम्मीदवारों का स्वागत किया और मछली और कवच मछली उत्पादन, मछली रोग निदान और स्वास्थ्य प्रबंधन के महत्व के बारे में जानकारी दी। भाकृअनुप-सिफरी, भाकृअनुप -सिफा, भाकृअनुप -सीबा, भाकृअनुप-एनबीएफजीआर, पश्चिम बंगाल कृषि एवं प्राणी विश्वविद्यालय, निजी उद्यमी, वैज्ञानिक और प्रोफेसर अन्तर्स्थलीय जल में मछली स्वास्थ्य प्रबंधन के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिया। देश के विभिन्न हिस्सों से 500 से अधिक अनुप्रयोगों के आशातीत प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं जिनमें से 100 प्रतिभागियों ने गुगुल मीट प्लेटफॉर्म पर प्रशिक्षण में भाग लिया और अन्य लोग यूट्यूब चैनल (एआईएनपी फिश हेल्थ सिफरी) में लाइव प्रसारण पर सक्रिय थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य था - ऑनलाइन प्रशिक्षण के माध्यम से मछुआरों और मछली किसानों के ज्ञान और क्षमता में वृद्धि करना तथा उद्यमी, छात्र और व्यवसायी को वैज्ञानिक रूप से मछली और शेलफिश के रोगों के बारे में जानकारी देना जिससे इसके प्रबंधन से मछली और शेलफिश के उत्पादन में वृद्धि हो सके।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- छत्तीसगढ़ के कोडार जलाशय सर्वेक्षण में 6 ऑर्डर और 14 फैमिली के तहत 40 मछली प्रजातियों को दर्ज किया गया। पकड़ संरचना के अनुसार प्रजाति विविधता प्रचूर पायी गयी जिसका अर्थ यह है कि इस जलाशय की पारिस्थितिक तंत्र उत्तम है और वैज्ञानिक प्रबंधन के माध्यम से इसमें मात्स्यिकी विकास किया जा सकता है।

- मानसून पूर्व अवधि में हीराकुंड जलाशय में प्रारंभिक सर्वेक्षण में मछलियों की लैंडिंग में परभक्षी विदेशी मछली, ओ. नाइलोटिकस की उपस्थिति का पता चला। यद्यपि ओ. नाइलोटिकस की पकड़ प्रमुख देशी मछलियों की तुलना में अपेक्षाकृत कम देखा गया, पर इसके लिए देशी मछलियों पर वैज्ञानिक तौर पर विस्तृत जांच किया जाना चाहिए।

- मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार के सहयोग से डंबूर जलाशय, त्रिपुरा में पिंजरों में कॉमन कार्प (साइप्रिनस कार्पियो) का प्रायोगिक पालन शुरू किया गया। साइप्रिनस कार्पियो की कुल 20,000 अंगुलिकाओं को जलाशय में स्थापित दस पिंजरों (6 मीटर लंबाई x 4 मीटर चैड़ाई x 4 मीटर गहराई) में संचयित किया गया। पारिस्थितिक अध्ययन से पता चला कि इस अवधि में 38 मछलियों को पकड़ा गया जिसमें छोटी स्वदेशी मछली, एंबलीफेरींगोडोन मोला की बहुलता थी।

- मोरीगांव जिले के डंडुआ और 46-मोराकोलोंग बील और असम के नगांव जिले के लखनबंदा और रूपही बील के जैविक और अजैविक मापदंड और प्रारंभिक मूल्यांकन के अनुसार, इन जलनिकायों की पारिस्थितिकी मछली उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं। मौसम के दौरान डंडुआ, 46-मोराकोलोंग, लखनबंदा और रूपही बील से क्रमशः 25, 36, 17 और 28 मछली प्रजातियों को दर्ज किया गया है। जल की क्षारीयता पीएच (5.6-7.2), उत्तम घुलित ऑक्सीजन (7.6-9.96 मिलीग्राम / ली.), मध्यम अम्लीयता (28-65 मिलीग्राम / ली.), मुक्त कार्बन डाइऑक्साइड कम (शून्य से 4 मिलीग्राम / ली.), चालकता (95-170 μ सीमेन्स / सेमी) और टीडीएस (82-260 पीपीएम) पाया गया।

- मोयना एक्काकल्चर हब, पूर्वी मिदनापुर, पश्चिम बंगाल में मछली की मृत्यु दर की जांच की गई जिसमें एरोमोनास एसपीपी का संक्रमण प्रमुख कारण देखा गया। इसके लिये उपयुक्त निदान उपायों को अपनाने का सुझाव दिया गया था।

- फरवरी 2021 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज जल विस्तार क्षेत्र से मछलियों की लैंडिंग अनुमानतः 12,235 टन था। पिछले महीने की तुलना में, कुल मछली पकड में लगभग 80 प्रतिषत की वृद्धि हुई है। अन्य समूह का योगदान अधिकतम था, उसके बाद विदेशी मछलियों का योगदान था जबकि कैट फिश का योगदान सबसे कम था। विदेशी प्रजातियों में कॉमन कार्प की बहुलता देखी गई।

- पश्चिम बंगाल में हुगली मुहाना के एक प्रमुख मछली लैंडिंग केंद्र, फ्रेजरगंज में शीतकालीन प्रवासी बैग नेट मत्स्य पालन में सेटिपिन्ना टेटी, लेप्टुराकैंथस सावला और कोइलिया दुसुमेरी को प्रमुख मछली प्रजातियों के तौर पर दर्ज किया गया।

- वर्ष 2011-2020 के लिए एकत्र किए गए समय श्रृंखला के आंकड़ों के साथ तमिलनाडु की पुंडी जलाशय की मछली उपज पर मछली के बीज संचयन के प्रभाव का आंकलन किया गया था। जलाशय में संचयित प्रमुख मछली प्रजातियां, *लेबियो कतला, एल रोहिता, सिरहिनस मृगला* और *साइप्रिनस कार्पियो* थीं। पियर्सन सहसंबंध विश्लेषण से पता चला है कि स्टॉकिंग घनत्व का मछली की उपज (आर = 0.59) के साथ एक मजबूत सकारात्मक संबंध है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 25 फरवरी, 2021 को आईआईटी जम्मू द्वारा आयोजित रिवर कॉरिडोर अनुसंधान और प्रबंधन पर आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और 'नदियों में एक्कालाइफविस बनाम एंथ्रोपोसिन' पर एक आभासी वार्ता प्रस्तुत किया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 25 फरवरी, 2021 को एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड द्वारा आयोजित मात्स्यिकी संस्थान उद्योग इंटरफेस मीट में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 1 मार्च, 2021 पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा आयोजित नदी घाटी और जलविद्युत परियोजनाओं के लिए ईएसी बैठक में भाग लिया।

- संस्थान ने वर्चुअल मोड में दिनांक 2 मार्च 2021 को मत्स्य पालन विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित भारत में विदेशी जलीय प्रजातियों के पालन पर राष्ट्रीय समिति की 26 वीं बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 7 मार्च 2021 को मात्स्यिकी महाविद्यालय, असम कृषि विश्वविद्यालय में स्थापना दिवस के अवसर पर व्याख्यान दिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 8 मार्च 2021 को वर्चुअल मोड के माध्यम से ब्रिटिश उच्चायोग द्वारा आयोजित विज्ञान और नवाचार नेटवर्क पर भारत-यूके वेबिनार में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 9 मार्च 2021 को यूके-इंडिया एक्काकल्चर पार्टनरशिप मीटिंग में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 16 मार्च 2021 को 'मछली प्रजनन में अंतःस्रावी व्यवधान का आकलन' विषय पर डीबीटी परियोजना पर हुए बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 16-19 मार्च 2021 के दौरान तटीय कृषि: सतत खाद्य और आय सुरक्षा के लिए तटीय क्षेत्र में परिवर्तन' विषय पर आईएससीएआर द्वारा आयोजित वेबिनार सह अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

अन्य

- संस्थान का 75वां स्थापना दिवस दिनांक 17 मार्च 2021 को प्लेटिनम जुबली के तौर पर मनाया गया।
- संस्थान ने दिनांक 17 मार्च 2021 को शैक्षिक, शोध सहयोग तथा छात्र मार्गदर्शन के लिए मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर, बिहार के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।
- संस्थान में विश्व जल दिवस के अवसर पर दिनांक 22 मार्च 2021 को 'स्थायी मात्स्यिकी के लिए जल का मूल्यांकन' विषय पर एक दिवसीय आभासी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 150 मछुआरें, राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारी, वैज्ञानिक और संस्थान के अधिकारी उपस्थित हुए।
- संस्थान ने दिनांक 10 मार्च 2021 को केरल राज्य के अलाप्पुझा जिले के थाइकट्टुसरी गांव में, वेम्बनाड झील से सिफरी एचडीपीई सीआरपीएस (क्लाइमेट रेजिलिएंट पेन सिस्टम) में करली सीपी (ब्लैक क्लैम), विलोरिटा सप्रिनोइड का सफलतापूर्वक पेन पालन किया है। इसके अंतर्गत अक्टूबर 2019 में पेन में ब्लैक क्लैम का सचयन किया गया था। थायकाटुसेरी ब्लैक क्लैम इंडस्ट्रियल सहकारी सोसाइटी लगभग 1200 सक्रिय मछुआरे जिसमें सदस्य हैं, के सहयोग से यह पालन किया गया।
- इंडियन मेजर कार्प और कैटफिश (मिस्टस काविसियस) के संचयन को बढ़ाने के लिए उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में गंगा नदी के विभिन्न हिस्सों में 4 रैंचिंग कार्यक्रमों के माध्यम से संस्थान ने कुल 70 हजार भारतीय मेजर कार्प और कैटफिश अंगुलिकाओं को प्रवाहित किया है।

प्रशिक्षण

- संस्थान ने नदीय मत्स्य पालन के सतत प्रबंधन पर दिनांक 23 से 24 फरवरी 2021 के दौरान दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ऊपरी हुगली मुहाना के 200 से अधिक मछुआरों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और उन्हें हिल्सा संरक्षण के साथ-साथ गंगा नदी के अन्य मछली स्टॉक के संरक्षण के बारे में जागरूक किया गया। डॉल्फिन संरक्षण और गंगा नदी के एक राष्ट्रीय जलीय जानवर के रूप में डॉल्फिन के महत्व के बारे में जागरूकता भी पैदा की गई।
- संस्थान के कोच्चि अनुसंधान स्टेशन द्वारा मलयालम भाषा में अन्तर्स्थलीय खुले पानी में पेन पालन तकनीक द्वारा उत्पादन संवर्धन' पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 1 मार्च 2021 को आयोजित किया गया था। केरल के कुल 100 मछुआरों/ मछली किसानों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- 'मछली संरक्षण और मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए नदी पालन का महत्व' पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 2 मार्च 2021 को आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 50 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- दिनांक 9 मार्च 2021 को 'आर्द्रभूमि में मात्स्यिकी संवर्धन' पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 60 मछुआरों ने भाग लिया।
- दिनांक 11 मार्च 2021 को एनआईसीआरए परियोजना के तहत, असम के 47-मोरकोलोंग बील में मछली के अंगुलिकाओं के संचयन के साथ-साथ बील मछुआरों के साथ एक संवादात्मक बैठक के माध्यम से जलवायु-लचीला आर्द्रभूमि मत्स्य पालन कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में 30 बील मछुआरें और एएफडीसी के अधिकारियों ने भाग लिया।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र में मत्स्य संवर्द्धन योजना के तहत संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी ने दिनांक 6-17 मार्च 2021 के दौरान बोरबोईबील (बोंगाईगांव), घोड़ाजनबील (कामरूप ग्रामीण) रूपाहीबील (नागांव), सतभोनीबील (बक्सा), डंडुआ (मोरीगांव), गो बील (नलबाड़ी), कपलाबील (बारपेटा), हीरागोटा-रूमरीबील में दस जागरूकता-सह-मछली संचयन वृद्धि कार्यक्रम आयोजित किया है। इसके अंतर्गत (कामरूप ग्रामीण), लखनबंधबील (नागांव) और दुरमारा-बटामारबील (नलबाड़ी), असम में इंडियन मेजर कार्प, लेबियो बाटा और एल गोनियस मछलियों के कुल 3,88,000 उन्नत अंगुलिकाओं को विभिन्न बीलों में संचयित किया गया।
- दिनांक 22 मार्च 2021 को कोठिया मन, तेतारिया पूर्वी चंपारण, बिहार में 'कोठिया मौन में आर्द्रभूमि मात्स्यिकी विकास' पर एक दिवसीय एक्सपोजर विजिट सह प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 200 मछुआरों ने भाग लिया।
- दिनांक 22-23 मार्च 2021 के दौरान कृशि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, बिहार में 'पूर्वी चंपारण, बिहार के मछुआरों के लिए आर्द्रभूमि मत्स्य विकास' पर दो दिवसीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 500 मछुआरों ने भाग लिया।
- दिनांक 4-6 मार्च, 2021 के दौरान संस्थान मुख्यालय बैरकपुर में 'अन्तर्स्थलीय जल में मत्स्य रोग संक्रमण और स्वास्थ्य प्रबंधन' पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 100 मछुआरों और उद्यमियों ने भाग लिया।

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों के सामने चतुर्थ वर्ष का सातवें अंक (अप्रैल, 2021) प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए हार्दिक धन्यवाद। आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। सम्पादक मण्डल की तरफ से सभी पाठकगण को शुभकामनाएँ!

सिफरि समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है